International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 24-08-2019; Accepted: 26-09-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 6; November 2019; Page No. 65-67

'मैं पायल' उपन्यास में किन्नर त्रासदी जीवन का यथार्थ चित्रण

रामडगे गंगाधर पिराजी
पीएच.डी. शोधार्थी, हिंदी विभाग तमिलनाडु केन्द्रीय विश्वविद्यालय, तिरुवारूर, तमिलनाडु, भारत

प्रस्तावना

मंगलमुखियों का रहन-सहन, अस्तित्व एवं उनकी अस्मिता आज-कल चर्चा का विषय है। मंगलमुखियों से तात्पर्य है, जन्मत: जैविक लिंग से जिन लोगों की लैंगिक भावनाएं मेल नहीं खाती, ऐसे विविध लैंगिकतावादी व्यक्तियों को समाज में 'किन्नर', 'हिजड़ा', 'छक्का', 'मामू', 'कोज्जा', 'उभयलिंगी' आदि जैसे अनेक नामों से संबोधित किया जाता है। जिन्हें लैंगिक आधार पर न पुरुष कहा जा सकता है, ना ही स्त्री। कुछ इसी तरह अपने जीवन में उलझे मंगलमुखियों की वास्तविक कहानी को महेंद्र भीष्मजी ने 'मैं पायल' (2016) उपन्यास में रेखांकित करने का प्रयास किया है। इस उपन्यास में लखनऊ की किन्नर गुरु पायल सिंह के जीवन-संघर्ष का वास्तविक चित्रण है। इस जीवनीपरक उपन्यास में केवल पायल सिंह का ही नहीं, बल्कि पायल के माध्यम से समस्त किन्नर जीवन का यथार्थ अंकन परिलक्षित होता है। यह उपन्यास अनसुलझे सवालों को पाठकों के सामने उपस्थित करती है, जिससे उनके सुषुप्त अवस्थाओं की संवेदनाएं उन्हें झकझोरती हैं।

मंगलमुखियों(किन्नर) को समाज द्वारा उपेक्षा एवं तिरस्कार के अलावा कुछ नहीं मिला। इसी समाज ने उन्हें मनुष्य के रूप में न देखते हुए जानवरों से बदत्तर समझा। समाज का अभिन्न अंग होने के बावजूद भी उन्हें हाशिये पर धकेल दिया गया। समाज के साथ-साथ परिवार भी उसे अपने से पृथक करने में कोई कसर नहीं छोड़ता। हिजड़ा होने का एहसास भी सबसे पहले परिवार ही कराता है। पायल को पहले-पहल इस शब्द का अर्थ पता न था लेकिन पिता द्वारा बार-बार 'हिजड़ा' कहकर संबोधन करना पायल को स्त्री और पुरुष से इतर होने का एहसास कराती है। "जब भी पिताजी दारू के नशे में कोसते, गाली देते, 'ये जुगनी! क्षत्रिय वंश में कलंक पैदा हुई है, साली हिजड़ा है... आदि जाने क्या-क्या बकते रहते थे। 'हिजड़ा' यह शब्द सबसे पहले मैंने उन्हीं के मुख से सुना था। मुझे पूरी तरह से एहसास हो चला था कि मैं वहीं हूँ जो पिताजी गुस्से में मारते समय चिल्लाते-चीखते हैं। 'मैं हिजड़ा हूँ।' 'मैं एक हिजड़ा बच्चा हूँ...' यह आभास पिताजी के बारम्बार कहने-कोसने से मुझे हो चुका था।"1 लेकिन कहीं न कहीं, अंदर ही अंदर परिवार के लोग उस हिजड़ा रूप को स्वीकार भी करते हैं। बस डर होता है तो केवल उनके साथ किए जाने वाले सामाजिक भेदभाव तथा व्यवहार का। पायल के पिता ने उन्हें एक किन्नर होने पर भद्दी गालियाँ दी, कभी लाड़-प्यार नहीं किया लेकिन बेटी के प्रति अपना भावात्मक लगाव अधिक दिनों तक छुपाकर नहीं रख पाते। वे अपने बच्चों के लिए मिठाइयाँ लेकर आते है और साथ में विशेषकर पायल के लिए पैंट-शर्ट। उसी दिन से वह घर में जुगनी से जुगनू बना दी जाती है। पिता का एक बेटी के प्रति स्नेह भरा प्यार किन्नर रूप को छुपाकर, पायल को एक लड़के का रूप देना चाहते थे। उसका यह रूप आश्चर्यजनक था लेकिन पायल की वास्तविक जिंदगी एक किन्नर के रूप में ही थी। अपने बच्चों के लिए प्यार और आत्मियता पिता से अधिक माँ का दिखाई देता है। चाहे वह लड़का हो या लड़की या फिर एक किन्नर ही क्यों न हो; माँ के लिए तो सब एक समान होते हैं। पायल को किन्नर होने की वजह से परिवार में कम प्यार मिला लेकिन माँ शांता मानसिक तथा व्यावहारिक रूप से उनके करीब थी। जिस प्रकार फूलों को एक माला का रूप देने का काम धागा करता है, ठीक उसी प्रकार परिवार के सारे सदस्यों को एकजुटकर रिश्तों को संजोये रखने का काम एक माँ ही कर सकती है; माँ शांता ने भी यही किया।

सच कहा जाये तो पायल के पिता अपनी बेटी एक किन्नर होने की वजह से, वे अंदर ही अंदर टूट जाते है। शराब का सहारा अधिक मात्रा में लेने लग जाते है। उनका स्वभाव चिडचिड़ा और क्रूर बन जाता है। पायल का हिजड़ा(किन्नर) होना अपनी बदनामी तथा आन-बान-शान के खिलाफ समझने लग जाते है। जिसके चलते वे पायल और पायल की माँ शांता की हमेशा पिटाई करते दिखाई देते है। जन्म से ही पायल को दु:ख, अपमान और पीड़ाओं के सिवाय कुछ नहीं मिला। पायल के पिता पायल की माँ से कहते हैं, "कान खोलकर कर सुन ले कमलेश की अम्मा! अगली बार जब मैं आऊ और यह साला हिजड़ा लड़की के कपड़े पहने मिला और घर के बाहर निकला, तो मैं अपने ही हाथों से इस साले का खून कर दूंगा।"2 लोग हर बार क्यों भूल जाते हैं कि हिजड़ा भी तो एक मनुष्य का ही रूप है? उन्हें मनुष्य न समझकर, उनके साथ जानवरों जैसा बर्ताव क्यों किया जाता है? पिता द्वारा बेटी पायल का फ्रॉक फाड़ दिए जाना, बालों की चोटी नोचकर, लात-घुस्सों से पिटाई करना, शरीर से सारे कपड़े हटाकर पानी के टब में डुबोकर चप्पलों से पीटना तथा नग्न अवस्था में उसे फांसी पर लटकाकर जान से मारने का प्रयास करना इन सभी कुकृत्यों से अनुमान लगाया जा सकता है कि एक किन्नर बच्चे का होना उनके परिवार के लिए कितना कलंकित था। पायल एक किन्नर है तो उसमें उसका क्या दोष? दोष तो माँ-बाप का भी तो न था, फिर एक किन्नर बच्चे के साथ ऐसा दुर्व्यवहार क्यों?

बचपन से ही परिवार से कटे इन लोगों द्वारा समाज का तिरस्कार स्वाभाविक है, क्योंकि समाज के डर से उन्हें परिवार से बेदखल कर दिया जाता है। लेकिन परिवार से उनका भावात्मक (एकतरफा?) जुड़ाव मन की फ्रायडियन अवस्थाओं में बना रहता है, जबकि परिवार की ओर से किसी भी तरह का लगाव दृष्टिगोचर नहीं होता। बरसों से यह लोग समाज में अपने होने न होने का आजीवन दंश झेल रहे हैं। फिर भी वे कभी किसी को श्राप नहीं देते, वे केवल सबको आशीर्वाद देना चाहते हैं। दूसरों के सुख में मुग्ध होकर नाचते-गाते हैं। इन तृतीयपंथियों का भविष्य आज पूर्णरूप से अँधेरे में है, उनका जीवन खतरों से भरा है और यह खतरा कड़कती बिजलियों की तरह आसमान से नहीं, बल्कि मनुष्य के बनाये सामाजिक बंधनों, रूढ़ि-परंपराओं से उपजा है। यह हम इंसानों की कमी है जो इनकी पूजा तो करते हैं लेकिन साथ ही साथ इन्हें अपमानित करने से भी नहीं चूकते। मनुष्य संसार बनाने वाले को तो पूजता है, लेकिन उसके बनाये संसार को भूल जाता है। जिस प्रकार मछली को पानी से अलग करने के बाद, वह जीने के लिए तड़पती है, ठीक उसी प्रकार की अवस्था, इन अभागों की समाज से बेदखल करने के बाद हो जाती है।

परिवार से विस्थापित या बेदखल कर दिए जाने के बात इस दुनिया में मंगलमुखियों के लिए अपना कहने वाला कोई नहीं होता। ऐसे लोगों(किन्नर) का अपनी वास्तविक पहचान छुपाकर घर में रहना, परिवार के लोगों तथा रिश्ते-नातेदारों को कतई स्वीकार नहीं है। अगर घर में रहकर जीवन व्यतीत करने भी लगे तो परिवार द्वारा असहनीय पीडाएं तथा लांछन सहने के अलावा कुछ नहीं मिलता। ऐसी अवस्था में यह किन्नर बच्चे अपने परिवार का त्याग करना ही उचित समझते हैं। बाहर की दुनिया का सहारा लेना चाहते हैं लेकिन वहां से भी उन्हें दुत्कार दिया जाता है। पिता द्वारा किये गये कुकृत्यों एवं दुर्व्यवहार की वजह

से घर का त्याग कर पायल खुद को समाप्त करने का प्रयास करती है। कुएँ में छलांग लगाने का ख्याल तथा रेलवे लाइन पर गाड़ी के आगे कूदकर जान देने का विचार मन में बार-बार आता है। लेकिन पैर में काटे के चूबन से होने वाली असहय पीड़ा से गाड़ी के आगे कूदने का विचार लगभग मन से निकल जाता है।

घर की चारदीवारी लांघने के बाद, बाहर की दुनिया में सांस लेना इन बच्चों के लिए इतना आसान नहीं होता। इनके लिए पग-पग पर विपदाएं खड़ी हो जाती हैं। स्त्री गंध का पता चलते ही देह के नरभक्षी भेड़ियें उसके सामने हाजिर हो जाते हैं। वे यह भी नहीं देखते हैं कि आगे वाली लड़की है या एक हिजड़ा, उन्हें तो बस अपनी शारीरिक भूख मिटाने से मतलब होता है। पायल घर से भागकर जब ट्रेन से अकेले सफ़र करने लगती है तब उस खाली डिब्बे में बैठे वयोवृद्ध व्यक्ति कम उम्र की पायल को रुपयों का लालच देकर अपनी शारीरिक भूख मिटाने के लिए जोर-जबरदस्ती करने की कोशिश करने लगता है। "मेरी ओर उसने बीस रूपये का नोट बढ़ाते कहा, 'ले रख ले और बाथरूम में आ जाना।' इतना कह वह बाथरूम की ओर इशारा कर चला गया।... कुछ देर बाद ही वह आया और मेरे पास सटकर बैठ गया। मुझे ठेलते हुए बोला, क्यों री तू आयीं नहीं... ले पचास का पकड़ आ जा जल्दी।"3 लेकिन पायल का उसे होशियारी से जवाब देना, इस संकट को मात दे जाता है। संसार में ऐसे नरभक्षी भेड़ियों की कमी नहीं है। हर जगह, हर प्रान्त, हर देश में ऐसे भेड़ियें देखने को मिलते हैं। हर पल समाज में स्त्री, किन्नर या यूँ कहूँ हर मादा के सामने ऐसी समस्याएं आ ही जाती है। उसी रात रेलवे स्टेशन पर पायल को अकेला पाकर वहां के हवलदार के मुहं से लार टपकने लगता है। हवालदार पायल को अंधेरे में ले जाकर उसके साथ दुष्कर्म करने का प्रयास करता है लेकिन कुछ देर बाद ईश्वर की कृपा से पायल उस भेड़ियें की चंगुल से भी बच निकलती है। अप्सरा टॉकीज का चौकीदार प्रमोद का पायल से जबरदस्ती करना हो या एक किन्नर होने पर पप्पू (पीलू दादा) द्वारा पायल को सरे आम, बीच-बाजार में निर्वस्त्र कर पीटना। यह तमाम घटनाएँ साबित कर देती हैं कि किन्नरों की समाज में क्या अवस्था है। घर से विस्थापित होकर बाहर के समाज में लड़कियों का रूप धारण कर रहना, इन किन्नरों के लिए ख़तरों से खाली नहीं है।

चौकीदार प्रमोद का पायल के साथ किये गये दुर्व्यवहार से, पायल अप्सरा टॉकीज के कैंटीन का काम छोड़ चुकी थी। फिर पेट की आग मिटाने के लिए दर-दर भटकना पड़ रहा था। ऐसे समय में पायल को काम या रोजगार की सख्त जरूरत थी। जिससे वह अपना पेट भर सके। पायल घर से भागी तो मरने के लिए थी लेकिन वह एक दिन ऐसी गिरोह की दलदल में फंस जाती है जहाँ से जिंदा बाहर निकलना लगभग नामुमकिन था। वह गिरोह बच्चों से भीख मंगवाता था, उनकी नजर कई दिनों से पायल पर भी थी। रेलवे स्टेशन पर पायल को अकेला पाकर गिरोह के एक आदमी ने उसे बहला-फुसलाकर, काम का लालच देकर अपने संग ले गया। लेकिन उस आदमी ने पायल को काम की बजाय भीख मांगने पर मजबूर कर दिया। "दूसरे बच्चों की तरह मुझसे भी भीख मंगाई जाने लगी। मैं कहीं भाग न सकूँ इसलिए गिरोह के लोगों की नजर मुझ पर बराबर रहती थी। यही स्थिति अन्य बच्चों की भी थी। ज्यादातर बच्चे अपने घर-परिवार वालों से तंग आकर इस दलदल में आ फंसे थे। घर से भागने की उन सभी के पास अपनी-अपनी वजहें थी। पर उनमें मेरी तरह एक भी न था, जो हिजड़ा होने के कारण अपने पिता की नफरत और मार से बचने के लिए घर से भागा हो। भागी तो थी मरने के लिए पर मुझे क्या पता था कि मैं इस नरक में आकर ऐसी बद से बदतर स्थिति को प्राप्त होऊँगी।"4

एक मंगलमुखी (किन्नर) का कानपुर के अप्सरा टॉकीज के कैंटीन में चाय-समोसा बनाने काम करना हो या पूनम टॉकीज में प्रोजेक्टर चलाना या फिर लखनऊ में आर्केस्ट्रा का काम करना; पायल ने यह साबित कर दिखाया था कि सामान्य लोगों की भांति एक मंगलमुखी भी सारे काम कर सकती है। चाहे वह काम स्त्री का हो या किसी पुरुष का। इनमें भी सामान्य लोगों की तरह प्रतिभा और शक्ति होती है। सामान्य लोगों की तरह वे भी नौकरी वैगरा कर सकते हैं लेकिन यह समाज उन्हें करने नहीं देता। हम उनके किन्नर होने का फायदा उठाते हैं, उन्हें उपहास के पात्र बनाते हैं। शायद इसी कारणवश वे हमारे बीच नहीं रहते, काम नहीं करते। कुछ लोग होते हैं, जो यह सब भूलकर समाज के बीच काम करते रहते हैं। ऐसा नहीं है कि उन्हें मुश्किलों का सामना नहीं करना पड़ता। पायल की जिंदगी भी कुछ इसी तरह से गुजर रही थी। बचपन से लेकर किशोर अवस्था तक उसका जीवन हमेशा से ही उलझनों से भरा रहा। उसे कोई लड़की के रूप में संबोधित करता तो कोई लड़के के रूप में लेकिन पायल ने समय के अनुसार इन दोनों किरदारों को निभाकर, यह साबित कर दिखाया है कि घर से बेदखल किन्नर किसी स्त्री-पुरुष से कम नहीं है। लेकिन समाज में घर वालों की बेइज्जती के डर से पायल को अपनी असलियत छुपाकर रहना पढ़ा था।

भूख की पीड़ा क्या होती है, एक भूखे व्यक्ति के अलावा कोई और अच्छे से नहीं जान सकता। पेट की आग(भूख) मनुष्य से क्या-क्या नहीं करवाता। इंसान उन परिस्थितियों के साथ समझौता कर लेता है, कुछ भी कर-गुजरने के लिए मजबूर हो जाता है। भूख की पीड़ा से पायल भी अच्छी तरह वाकिफ हो चुकी थी। भूख से तड़प रही पायल को रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर कोई खाना खाते मिल जाता तो उसे इस आस से ताकती रहती है कि आगे वाला व्यक्ति तरस खाकर कुछ खाने को दे दे। पर नहीं वहां से उसे दुत्कार दिया जाता। एक जगह दो व्यक्ति अपना टिफिन खोले भोजन कर रहे थे। पायल बड़ी उम्मीद के साथ हाथ जोड़कर रोटी के लिए विनती करती है लेकिन पायल को बदले में मिलती है तो केवल गालियाँ और दुत्कार। एक व्यक्ति के टिफिन का खाना बदबू दे रहा था, उसने एक भूखे को खाना खिलाने की बजाय अख़बार में लपेटकर फेंक दिया। "चल भाग साले, पता नहीं कहाँ-कहाँ से चले आते है...? बड़ा आया भूखा हूँ साहब कहने वाला।... पता नहीं इन सालों को इनके माँ-बाप पैदाकर भीख मांगने क्यों छोड़ देते हैं?... भागता है यहाँ से साले या लगाऊँ दो हाथ।... मैं प्लेटफार्म से उतरकर फेंके गये भोजन को उन दोनों की जनरों से बचाकर उठा लाई और दूर आ गयी। मैंने देखा अख़बार में लिपटे पराठों के बीच घुईयाँ की सब्जी थी, जो दूर से ही दुर्गन्ध दे रही थी। मेरा मन उसे न खाने के लिए हुआ, पर भूख इतनी तेज लगी थी कि मुझसे रहा नहीं गया और मैंने उस दिन घुईयों की सड़ चुकी सब्जी व पराठे खाकर अपनी क्षुधा मिटाई थी।"5

किन्नर बिरादरी के वरिष्ठ लोग समाज में अपनी पहचान बनाना चाहते हैं। उसी समाज में रहकर अपने लोगों का संगठन बनाकर, अपनी शक्ति को मज़बूत करना चाहते हैं। इसलिए वे अपने बिरादरी के लोगों को ढूँढ़ते फिरते हैं। जबरन अपने संगठन में शामिल कर लेते हैं। अपनी शिष्या बनाकर अपने बिरादरी का विकास तथा वर्चस्व बनाए रखना चाहते हैं, ताकि उनकी एकता हमेशा अमर रह सके। पायल भी इस समुदाय के गिरफ्त में आ चुकी थी। लखनऊ की किन्नर मोना गुरुमाई ने उसे भूखे-प्यासे रखकर जबरन अपने समुदाय में शामिल कर लिया था। अन्य किन्नरों संग बधावा मांगने के लिए उसे मजबूर किया। गुरुमाई गुस्से से बोली, "एक हफ्ते से तू यहाँ पड़ी-पड़ी रोटियाँ तोड़ रही है। तेरे बाप-दादा लाकर रख गये थे क्या? काम नहीं तो खाना नहीं... बंद कर दो इस हरामजादिन को और ख़बरदार! जो किसी ने इसे पानी को भी पूछा।"6 माँ की ममता और परिवार के एक तरफा आत्मीय प्रेम से एकाएक दूर हो जाना पायल के लिए पीड़ादायक था। चौदह वर्ष की बाल्यावस्था में किन्नरों का अपरिचित और सर्वथा भिन्न संसार उसके लिए एक संघर्ष का अनुभव था। भिन्न परिवेश से जुड़ने और ज़िंदा रहने के लिए पायल को समझौता करना जरुरी था।

अधिकतर लोगों को लगता है कि मंगलमुखी (किन्नर) अपने समुदाय में रहकर बहुत खुश रहते होंगे लेकिन हमारा ऐसा सोचना गलत है, क्योंकि गुरु शिष्य की परंपरा में उन चेलों की गुरु अपने चेलों का मानसिक एवं शारीरिक शोषण करती है। उनके कमायें पैसों से ऐशों-आराम की जिंदगी जीती हैं; शराब, बदन पर ढेर सारा आभूषण पहनती है। पायल इन मान्यताओं के सख्त खिलाफ थी, वह इस प्रथा का विरोध करती है। किन्नर समाज में फैली बुराईयों को दूर करना चाहती है। वह एक किन्नर को अपने अनुसार स्वतंत्र जीवन जीने के पक्ष में होती है। फलस्वरूप वह आज एक किन्नर होने के बावजूद भी स्वतंत्र जीवन जीती है और अपने चेलों पर किसी प्रकार का दबाव भी नहीं डालती।

विशेष रूप से अगर कहा जाये तो सबसे पहले हमारे इस सभ्य कहे जाने वाले समाज में मंगलमुखियों को उनके पहचान के साथ रहने देना चाहिए। तभी वे समाज में फैली इन तमाम भ्रांतियों से मुक्त होकर अपना स्वतंत्र जीवनयापन कर सकेंगे। साथ ही किन्नर समुदाय में पनप रही बुराईयों को जड़ से ख़त्म कर देना

चाहिए। तभी वे सड़क-चौराहे पर ताली पीटकर पैसे मांगने की बजाय सामान्य लोगों की तरह छोटा-मोटा कार्य कर, आर्थिक रूप से उन्नत हो सकेंगे। उपन्यास में किन्नर समुदाय की जैविक संरचना, जीवन-शैली, सामाजिक तथा आर्थिक परिवेश का चित्रांकन बखूबी से किया गया है। महेंद्र भीष्म ने इस उपन्यास में किन्नर गुरु पायल सिंह के माध्यम से किन्नर लोगों से जुड़ी समस्याओं को उजागर ही नहीं किया, बल्कि समाज में फैली बुराईयों को दूर कर एक नये समाज के निर्माण की परिकल्पना की की है।

संदर्भ सूची

1. महेंद्र भीष्म, 'मैं पायल' (2016), अमन प्रकाशन, रामबाग, कानपुर, पृ. 26, 34
2. वही, पृ. 36
3. वही, पृ. 46
4. वही, पृ. 76
5. वही, पृ. 62, 63
6. वही, पृ. 97